# 'पिलपिलहा गाछ'– सफल बालकथा–संग्रह

**डॉ0 राज कुमार प्रसाद**

अध्यक्ष, मैथिली विभाग

जनता कोशी महाविद्यालय

बिरौल, दरभंगा

## सारांश

मैथिलीमे बालकथा साहित्यक आरम्भ उनैसमे शताब्दीक उतरार्द्धमे कवीश्वर चन्दा झा कयने छलाह । ओ बालवयस लेल वातावह्न तथा कतोक कथा–पिहानीक रचना कयने छलाह । लिखलनि तँ परवर्ती साहित्यकारो मुदा बाल साहित्य ओ समृद्धि प्राप्त नहि कऽ सकल । वर्तमान समयमे कतेको साहित्यकार एहि दिस प्रवृत्त भेलाह जाहिमे एकटा छथि मुरलीधर आ हुनक पोथी 'पिलपिलहा गाछ' । बाल साहित्यक जे मापदंड ताहिपर ई बाल कथा–संग्रह लिखल गेल अछि । एहिमे 22 टा कथा संग्रहित अछि जकर कथानक सरल, सहज ओ प्रभावी अछि ।

एहि संग्रहक कथा सभ बाल मानसिकताक अनुरूप ओ ग्रहण शक्तिकेँ ध्यानमे रखैत रोचकता, उत्सुकता, सरलता, मनोरंजकता, कर्त्तव्यताक आदेश, नैतिकताक उपदेश ओ बोधगम्यता अछि जे बालवर्गीय पाठकक चरित्र निर्माणमे परोक्ष भावसँ सहायक भऽ सकैछ ।

बीज शब्द : बालकथा, पिलपिलहा गाछ, वयसानुरूप बाल साहित्य लेखन

प्रस्तावना :

दुइ गोट स्व सम्पादित कविता संग्रह भूकम्प काव्य, हंत अयोध्याकाण्ड, स्वरचित विशिष्ट शोध–समालोचना कवीश्वर चन्दा झा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन, संरचना (शोधनिबन्ध सञ्चय) पश्चात् डॉ. मुरलीधर झा सर्जनात्मक कृति बालकथा–संग्रह 'पिलपिलाह गाछ' प्रकाशित भऽ चुकल छनि ।

'गद्यते–व्यवक्तावाचा कथ्यते इति गधम' अर्थात् गूढ़ भावकेँ स्पष्ट अभिव्यक्त करबाक हेतु जे कहल जाय ओ गद्य थिक । आजुक युग गद्यक युग थिक । गीत, नाटक, काव्य, महाकाव्य, गल्प, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र रिपोर्टाज, एकांकी आदि कतोक देहरि टपैत हम गद्यक विशाल बहुमुखी मञ्चपर जमल छी जतय कथा साहित्यक सौरभ अछि । एहिमे बालकथा भलेहि मैथिली साहित्य मध्य ओतेक विकसित नहि रहितहुँ अपन विशिष्टताक कारणेँ सुरभित भऽ रहल अछि ।

एहि क्रममे डॉ. मुरलीधर झा बालकथा–संग्रहक चर्चा करब हमर ध्येय अछि । पिलपिलहा गाछमे डा. मुरलीधर झा 21 टा कथा भैयारी, गुलामी, संतोषधन, अफवाह, धैर्य, हर्षक नोर, ओ के छलि ?

कृतज्ञ, कर्त्तव्य निष्ठ, प्रतिमा–प्रभास, ठक्क, अवमाननाक फल, दुष्ट शिखिर, मर्यादा, आमावास्याक भोर, राष्ट्रप्रहरी, सिनेहक सिन्दूर, भवितव्य, तृप्प, जुग–जुग जीबू, ओ पिलपिलहा गाछ संग्रहित अछि ।

एहि कथासंग्रहमे जे अंतिम कथा पिलपिलहा गाछ अछि ताहि आधार पर कथासंग्रहक नामकरण कएल गेल अछि । एहि कथासंग्रह पर 2012 ई.मे डॉ. मुरलीधर झाकेँ साहित्य बालसाहित्य–पुरस्कार प्राप्त भऽ चुकल छनि ।

एहि कथासंग्रह पहिल कथा अछि 'भैयारी' ताहिमे रामभद्रबाबू ओ सोनभद्रबाबू दुनू भैयारीक कथा अछि । भैयारी बँटबाराक कारणेँ परिवारमे कलह उत्पन्न तँ होइछ मुदा अन्तःमनमे एक–दोसक प्रति प्यार उमड़ैत रहैत छैक परिणामस्वरूप छोट भाइ रामचन्द्रबाबू अन्तमे अपन जेठ भाई सोनभद्रकेँ घरक कर्त्ता–धर्त्ता बुझि चुल्हि एकठाम कऽ लैत अछि । कथांश द्रष्टव्य– 'आइसँ एहि परिवारक कर्त्ता–धर्त्ता अहाँ भेलहुँ । हमर छौड़ा सब जँ बदमाशी करय तँ अहाँ लाठीसँ देह तोड़ि दिऔ । क्यो नहि रोकत ! आइसँ दुनू चूल्हि एक रहत । भैयारी बनल रहत।''[1]

एतय कथाकार परिवारक एकटा, पैघ महत्त्वक संगहि आपसी प्रेमक महत्त्वकेँ उजागर कयने छथि ।

मानवीय मूल्यक अवमूलन, विकृत मानसिकताक कारणेँ लोकमे नैतिकताक पतन भऽ रहल अछि । मानवसेवाकेँ लोक गुलामी बुझैत अछि एकर दर्शन होइछ हिनक कथा गुलामीमे । एहि प्रसंग द्रष्टव्य कथाक पाँती– ''हम ककरो जी–हजुरीमे नहि रहैत छी आब ! ओ दिन आब बीति गेलैक । आब हमरो कोनो छोट हस्ती नहि बुझू । सतुएक दोकानसँ तीस–चालिस रुपैया रोज कमा लैत छी । ककरो गुलामी किएक करबै ?''[2]

धैर्यसँ मनुष्य सभ किछु प्राप्त कऽ सकैत अछि । धैर्यसँ मनुष्यक जीवन ओ इच्छा सार्थक होइत अछि एकर संदेश दैत अछि हिनक कथा 'संतोष धन' । धैर्यक प्रसंग कहब छनि जे– ''सुख दुःख जीवनक प्रमुख अंग थिक । जीवनमे दुनूक अनिवार्यता रहैत छैक । जे मनुष्य दुनू परिस्थितिमे धैर्यपूर्वक बढ़ैत अछि, ओकरे जीवन सार्थक होइत अछि ।... जे संतोष पूर्वक अपन जीवन बितबैत अछि तकर सहायता देवतो करैत छनि ।''[3]

आई जे सम्प्रदायिकताक आगि कुत्सित मनोविकृतिक कारणेँ समाजमे पसरल अछि, जाहिमे सामाजिक समरसता सुडाह भऽ रहल अछि ताहिपर कुठाराघात कयल गेल अछि 'अफवाह' कथामे । जकर किछु पाँती द्रष्टव्य– ''समाजमे किछु गुंडा तत्त्व अछि जे ककरो शांतिसँ जीबऽ नहि देबऽ चाहैत अछि । ओकर ने कोनो जाति होइत छैक ने कोनो धर्म । ओ... समाजमे कटुता उत्पन्न करऽ चाहैत अछि । एहन लोकसँ समाजकेँ सचेत रहब चाही । अफवाह पर ध्यान नहि देबाक चाही । कोनो घटना घटला पर ओकर पूर्ण जानकारी प्राप्त करक चाही तथा न्याय सम्मत कार्यवाही करक चाही ।''[4]

धैर्यक फल सदिखन मीठ होइत अछि । धैर्यसँ जीवनक लक्ष्यकेँ प्राप्त कऽ सकैत छी, जकर चित्रण भेल अछि कथा 'धैर्य'मे ।

बच्चाक प्रति माय–बापक प्रेम, बच्चाक बालहठ, अभाव, मायक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेटैत अछि कथा 'हर्षक नोर' मे । नेनाक खुशीमे सभक खुशी कोना मिझरायल रहैत अछि ताहि भावपरक ई कथा अछि ।

मानवधर्म मानवसेवा, परोपकार थिक । मनुक्खकेँ परोपकारी होबक चाही। परोपकारमे धर्म, गाम–नामक महत्व नहि सेवाभावक महत्व होइत छैक । एहि भावपर लिखल अछि कथा 'ओ के छलि ?'

'कृतज्ञ' कथामे मनुक्खक कामक महत्ताकेँ उजागर कयल गेल अछि । अपन मेहनत, परिश्रमसँ लोक संसारमे आदर–भाव पबैत अछि ताही पर एहि कथामे प्रकाश देल गेल अछि ।

कर्त्तव्यनिष्ठ कथा प्रेरक प्रसंग पर आधारित अछि जे कथांशक भावहिसँ स्पष्ट अछि– ''.... तोहर जे काज करबाक पद्धति छह, ताहिसँ हमरो प्रेरणा लेबाक चाही। कतबो समय लगलह मुदा तोँ अगुतयलह नहि । आ हिम्मति सेहो नहि हारलह । फलतः तोँ अपन कार्यमे सफलता प्राप्त कइये कऽ छोड़लह ।''[5]

'प्रतिमा–प्रभास' कथामे सदाचारक शिक्षाक संग नारी शिक्षा पर सेहो जोर देने छथि । संतान तँ आखिर सताने होइत छैक ने चाहे ओ लड़का हो वा लड़की । क्यो घरक दीपक भऽ सकैत अछि । सदाचारक पाँती द्रष्टव्य–

''लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताऽयते् ।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत ।।''[6]

छात्रक लक्षणक प्रसंग प्रेरक प्रसंगक कथानकमे मिझरायल अछि मणिकाञ्चन सदृश्य द्रष्टव्य– ''कुसंगतिसँ बचबाक चाही आ अपनामे प्रेम–भावसँ रहबाक चाही । संगहि–

'काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च । स्वल्पाहारी गृहत्यागी छात्रस्य पञ्चलक्षणम् ।''[7]

लोभ पाप ओ विनाशक कारण बनैछ । कथ्यकेँ कतोक छोट छोट कथाक माध्यमे कथा 'ठक्क'मे कहने छथि । एहि कथा सँ ई भाव स्पष्ट होइत अछि जे– 'त्रिविधां नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्' ।

'अवमाननाक फल' कथामे कथाकार दूइटा बातक संदेश कथाक माध्यमे देने छथि जे गुरुक आज्ञा ओ आदेशक अवहेलना प्राणघाती होइत अछि संगहि सेवासँ जीवक स्वभावक नहि बदलल जा सकैत अछि । कथांश द्रष्टव्य– ''प्रिय शिष्य, कोनो व्यक्तिक दुर्गण तखनहि लुप्त भऽ सकैत अछि जखन ओ स्वभावसँ तँ नीक हो मुदा ओकरामे दुर्गण परोक्ष रूपेँ आयल हो । एहन व्यक्तिकेँ सुधारल जा सकैत अछि । मुदा जे जन्महिसँ विषधर अछि, जकर स्वभावे डँसब छैक, ओकरा कोना सुधारल जा सकैत छैक ? ओ कहियो अहूँकेँ डसि सकैत अछि ।''[8]

दुष्ट पर कखनहुँ विश्वास नहि करक चाही । दुष्ट प्राणघाती ओ दुःखदायी होइत अछि । जे 'दुष्ट खिखिर' कथाक कथासार एहि पाँतीसँ स्पष्ट अछि–

''दुर्जन पर नहि होइ सहाय ।
माङय पात जाहि पर खाय ।।''[9]

समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा जे मूलतः समाजक उच्चवर्ण ब्राह्मण, कैश्थ आदिमे व्याप्त अछि जे अल्पवयशु लड़कीक पतिक जँ मृतयु भऽ जाइत अछि जे ओकर पुनर्विवाह करब सामाजिक परम्पराकेँ तोड़ब बुझैत अछि । एहि रूढ़िवादी विचारधारा पर कुठाराघातक संग विधवा पुनर्विवाहकेँ जायज मानैत छथि कथा 'मर्यादा' मे । ई समाज सुधारवादी ओ प्रगतिशील विचारधारा पर आधारित कथा अछि ।

दामपत्य जीवनमे छोट–छीन नोंक–झोंक होइत रहैत अछि तेँ एहि समस्याकेँ मिलि–बैठि सुलझेबाक चाही । भावावेशमे उठाओल गेल कदम दुःखदायी होइछ । एकर निदान पश्चातापेटा भऽ सकैछ एहि भावक कथा अछि 'अमावास्याक भोर'।

'राष्ट्रप्रहरी' कथा देश भक्ति पर आधारित अछि । राष्ट्रीय सुरक्षाक प्रति प्रत्येक व्यक्तिकेँ केहेन विचार होबक चाही ? राष्ट्रबलिदानी पुत्रक एकटा पिताक कथन गौरवान्वित करैत अछि सभकेँ । कथांश द्रष्टव्य– ''मधुकानत बाबू बजलाह– कुलक सुरक्षा हेतु व्यक्तिक त्याग गामक सुरक्षा हेतु कुलक त्याग आ राष्ट्रक सुरक्षा हेतु एकाघटा गामोक परित्याग अपन संस्कृतिक परम्परा थिक ।''[10]

'सिनेहक सिन्दूर' कथाक कथानक तिलस्म पर आधारित रहितहुँ ई संदेश देबामे सफल भेल अछि जे मनुक्ख दुःखकेँ शाप नहि वरदान बुझि ओकर सामना करैत छथि तँ ओ सफल होइत अछि ।

'भवितव्य' कथाक स्तरक साधारण अछि । एकर मूलभाव अछि जे मित्रक मान–सम्मानक रक्षा सदिखन करक चाहीयैन मित्रकेँ।

'तृप्त' कथा मानवीय संवेदना पर आधारित एकटा बूढ़ बच्चा आ दुकानदारक कथा अछि । जे कतेको प्रश्नकेँ पाठकक समक्ष ठाढ़ करैत अछि ।

किनको लेल वस्तु उपयोग केलाक बाद वापस कऽ देबाक चाही । वस्तुक मूल्य समयगत उपयोगितासँ होइत अछि धयलासँ नहि एहि भावक कथा अछि– 'जुग–जुग जीबू' । ई कथा सामान्य कोटिक अछि ।

'पिलपिलहा गाछ' कथाक माध्यमे कथाकार ई संदेश देने छथि जे जहिना उपेक्षित, पिलपिलहा गाछ, अनुकूल वातावरण पाबि बगानक शोभा बनि जाइत अछि तहिना मनुष्योक जीवनमे होइत अछि । कथांश द्रष्टव्य– ''मनुष्योकेँ अनेक विपत्ति भोगऽ पड़ैत छैक । ताहिमे जे मानव धैर्यपूर्वक बढ़ैत रहैत अछि सैह एक दिन सभ कष्टसँ भऽ सफल होइत अछि ।''

एहि कथाक संदर्भमे श्रीरामदेव झाक कहब छनि जे– ''वृक्षक सचेतनताक सिद्धान्तकेँ चरितार्थ होइत देखाओल गेल अछि जे गाछ–वृक्ष सेहो अपन पालकक प्रति कृतज्ञता भाव कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य व्यक्त कऽ दैत अछि । ....ओना सेवाक फल मेवाक सन्देश अनायासे संचारित भऽ जाइत अछि ।''[12]

एहि कथासंग्रहमे संग्रहित कथाक विशेषताक सम्बन्ध मे डा. रामदेव झाक कहब यथोचित अछि– ''एहि संग्रहक कथा सभमे पुराण मानसिकताक अनुरूप बालमानसकेँ बोझिल बना देनिहार अकर्त्तव्यताक निषेध, कर्त्तव्यताक आदेश अथवा नैतिकताक उपदेश देबाक बलात् चेष्टाक स्थानमे घटित घटना, पात्रक स्वभाव ओ चरित्र अथवा आचरणक माध्यमे अनायास सहज रीतिसँ सद्भावना ओ सत्प्रेरणाक सन्देश सम्पुटित अछि जे बालवर्गीय पाठकक चरित्र–निर्माणमे परोक्ष भावसँ सहायक भऽ सकैछ ।''[13]

एहि कथा संग्रहक सबसँ उल्लेखनीय बात अछि प्रत्येक कथामे कथाक कोनो ने कोनो अंशक चित्र देल गेल अछि जे कथाकेँ बोधगम्य ओ चित्ताकर्षक बना दैत अछि।

निष्कर्षतः

पिलपिलहा गाछ बालकथा संग्रहमे संगहित कथा बच्चाकेँ कर्त्तव्यक पालन ओ नैतिकताक उपदेश पर आधारित अछि । एकर भाव–भाषा सहज ओ सरल अछि । बालवर्गीय पाठककेँ रोचकताक उत्पन्न करबाक संगहि परोक्ष रूपेँ चरित्र–निर्माणमे सहायक भऽ सकैछ । कथांशक चित्रांकन कथा मध्य एहि कथासंग्रह विशिष्टता अछि । साहित्य अकादेमीक पुरस्कारसँ पुरस्कृत अछि । बाल–साहित्यक जे अनिवार्य तत्त्व ओ उपयोगिता ताहिपर ई शतशः खड़ा उतरल अछि । तेँ हमरा जनैत एहि आलेखक शीर्षक सटीक ओ सार्थक अछि ।

संदर्भ सूची :

1. झा, श्रीमुरलीधर, 2010, 'पिलपिलहा गाछ', मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा, पृ. 18
2. तत्रैव, पृ. 20
3. तत्रैव, पृ. 27
4. तत्रैव, पृ. 31
5. तत्रैव, पृ. 55
6. तत्रैव, पृ. 56
7. तत्रैव, पृ. 57
8. तत्रैव, पृ. 68

9. तत्रैव, पृ. 72

10. तत्रैव, पृ. 88

11. तत्रैव, पृ. 113

12. तत्रैव, पृ. 9

13. तत्रैव, पृ. 8